कृतज्ञता

महात्मा गांधी के ''हिन्द स्वराज' के 'शिक्षा' अध्याय व 'मंगल प्रभात' के परिप्रेक्ष्य में 'नीति शिक्षा' की संकलपना व उसका समाधानः गुणात्मक व दार्शनिक अध्ययन''शोध प्रबन्ध की प्रस्तुति पर मुझे कत्वर्य–निष्पादन की अनुभूति हो रही है।

इस कार्य को करने की प्रेरणा देने से लेकर इसके पूर्ण कराने के लिये ज्ञान के स्त्रोत, सरल व्यक्तित्व, अत्यन्त विनम्र, मृदुभाषी मेरे शोध के विद्वान निर्देशक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद झाझरियाकी मैं हमेशा ऋणी रहूँगी। मैं इनके प्रति कोटिशः आभार व्यक्त करती हूँ। मैं कृतज्ञ हूँ डॉ. सुरेन्द्र कुमार तिवारी (शिक्षा महाविद्यालय, बोरांवा, खरगोन, म.प्र.) की जिन्होंने इस शोध को करने व अन्तिम रूप देने में सहायता व मार्गदर्शन प्रदान किया।

महान शिक्षाशास्त्री, मानवता के हेतु में समर्पित, मानवता के प्रतिरूप, दयावान, पूर्व–यूनेस्को चेअर, अनेकों राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय पदवियों व अलंकारों से विभूषित व अनेक प्रख्यात संस्थाओं में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन रहे, दिग्विभावित अनुसंधानकर्ता परम्आदरणीय महान विद्वान प्रोफेसर बी. के. पासी तथा विदुषी डॉ. एस. पासी द्वारा दी गयी प्रेरणाओं, दिये गये ज्ञान तथा दिये गये स्नेह से ही इस शोध प्रबन्ध का सफलतापूर्ण सम्पन्न होना सम्भव हुआ है। इस शोध प्रबन्ध का शार्षिक का विचार वस्तुतः प्रो. बी. के. पासी के सम्पर्क से ही उद्भूत हुआ था। इनके ऋणों से मैं कभी उऋण नहीं हो सकूँगी। मैं इन महान विद्वान व विदुषी के प्रति बारम्बार आभार व्यक्त करती हूँ।

शिक्षण, शिक्षार्थियों व शिक्षा अध्ययनशाला को समग्ररूपेण समर्पित; शीलता, सरलता, त्याग, दया, व विद्वता की प्रतिमान डॉ. कामाक्षी अग्निहोत्री के द्वारा दी गई शिक्षा मेरे लिये अधिकाधिक ज्ञानार्जन कर शोध अध्ययन करने में प्रेरणापुंज रही। मैं तहे दिल से इन विदुषी की शुक्रगुजार हूँ।

मैं अत्यन्त आभारी हूँप्रो. अर्चना दुबे, प्रो. एस. के. त्यागी, डॉ. लक्ष्मण शिंदे, डॉ. एम. बुद्धिसागर, डॉ. रमा मिश्रा, डॉ. मधुलिका वर्मा, श्री आर. हुरमाड़े तथा श्री एम. एस. बामनिया की।

मन–वचन–कर्म से महान त्यागी, निःस्वार्थ सेवाओं में समर्पित, दिगदर्शक विसर्जन आश्रम इन्दौर के कर्ता–धर्ता, योगगुरू जी के रूप में प्रतिष्ठित व प्रख्यात परम्आदर्णीय श्रीमान् किशोर जी गुप्ता का मैं अथकरूप से एहसान बयाँ करती हूँ जिन्होंने मुझे शोध विषयक व्यापक ज्ञान प्रदान किया तथा उक्त विसर्जन आश्रम में 'संवाद संगोष्ठियों' में उपस्थिति की अनुमति दी व सहयोग दिया।

मैं श्रद्धेय डॉ. विजय बाबू गुप्ता, विभागाध्यक्ष, फयूचर स्ट्डीस एण्ड प्लानिंग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की नम्रता, विद्वत्ता तथा इस शोध को करने व पूर्ण करने में इनके द्वारा मुझे निरन्तर दी गयी प्रेरणाओं तथा आशीषों के प्रति असीम आभार व्यक्त करती हूँ। बहुत–बहुत

आभारी हूँ मैं श्री जगदीशप्रसाद जाबरमल टीबरेवाला विश्वविद्यालय की तथा वहाँ केडॉ. एस. एस. कौशिक, प्रो. पूनिया, डॉ. योगेश शर्मा, श्री अजीत, श्री अनुराग,श्री सागर कछवाहा, श्री सुरेन्द्र जी की जिन्होंने मुझेमार्गदर्शन व सुविधाओं को यथा–आवश्यकता उपलब्ध कराकर इस शोध कार्य के पूरा करने में सक्षम बनाया।

मैं आभारी हूँ अपनी मित्र श्रीमति रश्मि पान्डे, श्रीमति प्रभाभट्ट व सुश्री रूचि सिंह की जिनके स्नेह, प्रोत्साहन व मदद से ही यह शोध आरम्भ हुआ और पूरा हुआ।

मैं आभारी रहूँगी शिर्डी वाले साईं बाबा की जिन्होंने शारीरिक तथा बौद्धिक रूप से अनवरत मुझे इस काबिल बनाये रखा कि उनके श्रद्धा व सबूरी सिधान्तों की बदौलत इस शोध कार्य को शुरू करने और पूर्ण कर सकने में सक्षम रह सकी।

दिनॉकः––सितम्बर–2016 प्रियंका ठक्कर